Topic-

***भारतीय ज्ञान परंपरा एवं भारतीय शिक्षा***

Research scholar Name-MAMTA
(sociology department)
D.S.N p.g.college Unnao,209801
Address -
D.S.N.PG College, UNNAO(CSJMU,Kanpur),U.P.

**Research paper title-भारतीय ज्ञान परंपरा एवं भारतीय शिक्षा**

# भारतीय ज्ञान परंपरा एवं भारतीय शिक्षा

**सार- हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों साल पुरानी है। भारतीय ज्ञान परंपरा, ज्ञान,विश्वास एवं परंपराओं का एक तंत्र है । हमें अपनी भारतीय ज्ञान परंपरा को बाजारवाद से बचाने की जरूरत है। भारतीय ज्ञान परंपरा भारत सरकार की शिक्षा मंत्रालय का एक प्रभाग है। जिसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा का संरक्षण एवं उसे प्रगति प्रदान करना है। सन 2020 में लागू की गई भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा के सभी स्तरों में भारतीय ज्ञान परंपरा को सम्मिलित करने पर विशेष बल प्रदान किया गया है। भारतीय संस्कृति वेद, तंत्र एवं योग की त्रिवेणी है। समान संस्कृति एवं परिदृश्य के साथ भारतीय ज्ञान परंपरा के संबंधों को सुरक्षित एवं प्रासंगिक बनाना है। अर्थात यह भारतीय ज्ञान परंपरा ग्रामीण एवं स्वदेशी लोगों के दैनिक जीवन के मूलभूत पहलुओं के बारे में निर्णय लेने में सहायता करता है। भारतीय लोग अनूठी संस्कृति और पर्यावरण से संबंधित तरीकों से चलने वाले लोग हैं। उन्होंने आज के बदलते युग में अपनी सामाजिक ,सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक विशेषताओं को बरकरार रखा है। स्वदेशी लोगों और स्थानीय समुदायों की ज्ञान प्रणाली और परंपराएं हमारी धरती की जैविक और सांस्कृतिक विधा की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्वदेशी लोगों का ज्ञान और अभ्यास प्रणालियां पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती हैं। और उनकी अनूठी संस्कृति ,पद्धतियां आधारित शिक्षा इनकी प्रमुख विशेषताएं होती हैं।**

**देशज ज्ञान हर संस्कृति व समाज के लिए आवश्यक होता है । यह सामुदायिक प्रथा और रिश्तो, अनुष्ठानों में अंतर्निहित है । तथा साथ ही व्यापक परंपराओं के बीच भी अंतर्निहित है। यह स्थानीय समुदाय की पहचान को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय ज्ञान परंपरा**

मुख्य रूप से समुदायों में व्यक्त होता है। और इसमें लोक कथाओं, धर्म , कृषि चिकित्सा की अभिव्यक्तियां होती हैं। भारतीय ज्ञान दुनिया के समुदायों में अपनी जड़े जमा चुका है। यह बहुत प्राचीन है तथा वर्षों के प्रयोग और अनुभवों से संचित ज्ञान प्रणाली है।

आदिकाल से ही भारत देश अपने धर्म ग्रंथो, संस्कृति एवं बहुभाषी गुण के लिए प्रसिद्ध रहा है। यह तीनों केवल शब्द मात्र नहीं अपितु प्रत्येक भारतीय के भाव है। जो उसे अपने देश की संस्कृति से विरासत में मिली है। भारतीय संस्कृति संरक्षण एवं संवर्धन हेतु भारतीय ज्ञान परंपरा का ज्ञान होना परम आवश्यक है। इसके बिना हम बालक के सर्वांगीण विकास की कल्पना नहीं कर सकते हैं। बालक जिस वातायन में निवास करता है। उसे आत्मसात करता है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति के भाव अपने आप भारतीयों में परिलक्षित होते हैं । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार भारतीय ज्ञान परंपरा का शिक्षा में आगमन शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को न केवल अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित कराएगी अपितु वर्तमान में संतुलित व्यवहार एवं सामाजिक स्वतंत्रता का अवबोध कराने की ओर अग्रसर भी करेगा।

हमारी भारतीय सभ्यता ने ज्ञान को बहुत महत्व दिया है भारत में ज्ञान का इतिहास लंबा है जो गंगा नदी की तरह निरंतर जारी है। आयुर्वेद, योग ,वेदांत और वैदिक ज्ञान सहित यह विज्ञान विश्व में कई मायनों में लागू है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि “स्वदेशी हमारे अंदर की वह भावना है जो निकटतम परिवेश एवं सेवा तक ही सीमित रखती है। और दूर के परिवेश को छोड़ देती है। यदि हमें यह दोषपूर्ण लगता है तो हमें इसके देशों को ना करते हुए दूर तक सेवा करनी चाहिए निकटतम पड़ोसियों द्वारा उत्पादित वस्तुएं उपयोग की जानी चाहिए ।और उन उद्योगों को कुशल और पूर्ण बनाकर उनकी सेवा करनी चाहिए। यह इस तरह के स्वदेशी को व्यवहार में लाया जाए तो यह सदियों चलती रहेंगी ।अत हमें स्वदेशी को नहीं छोड़ना चाहिए।”(यंग इंडिया)

स्वदेशी व्यक्ति और स्थानीय समूह की ज्ञान प्रणाली तथा प्रथाओं के द्वारा पृथ्वी की जैविक एवं सांस्कृतिक विभिन्नता को सुरक्षित रखना रखना भी महत्वपूर्ण होता है। स्वदेशी लोग पर्यावरण को ध्यान में रखकर अपने कार्यों का संचालन करते हैं। वर्ष 2020 में निर्मित की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को भारत के सनातन ज्ञान एवं विचारों के आलोक में निर्मित किया गया है। जिसके आधार स्तंभों में भारतीय ज्ञान परंपरा को एक केंद्रीय स्तंभ के रूप में स्वीकृत किया गया है। इस दिशा में

**नई पीढ़ी को भारतीय ज्ञान परंपरा से अवगत कराने एवं जोड़ने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने एक अभिनव पहल की है। इसके अध्ययन द्वारा निश्चित रूप से एवं निःसंदेह रूप से नई पीढ़ी के विद्यार्थियों में भारतीय ज्ञान और भारतीय होने का गौरव बहुत भी जागृत होगा।**

**मुख्य शब्द -भारतीय ज्ञान ,संस्कृति, परंपरा, मातृभाषा, आत्मनिर्भरता, आध्यात्मिकता।**

**भारतीय ज्ञान परंपरा से आशय एक ऐसी ज्ञान परंपरा से है। जो वैदिक एवं उपनिषद काल में विद्यमान थी। प्राचीन काल से ही हमारा भारत देश उच्च मानवीय मूल्यों एवं विशिष्ट वैज्ञानिक परंपराओं के लिए संपूर्ण विश्व में जाना जाता रहा है।**

**भारतीय ज्ञान परंपरा का अनुपालन करते हुए हमारा भारत देश धीरे-धीरे आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन का सूचक बनता गया । भारतीयता या भारतीय ज्ञान परंपरा शब्द मूल रूप से स्वदेशी वस्तुओं एवं स्वदेशी सरकार तथा स्वदेशी व्यवस्था से संबंधित है। स्वामी विवेकानंद द्वारा विदेशों में भारतीय संस्कृति की महानता तथा धर्म की सार्वदेशिक स्वरूप को स्पष्ट रूप प्रदान किया । जिससे भारतीयों के अंदर अपनी संस्कृति को लेकर आत्मनिर्भरता की भावना जागृत हुई।**

**विवेकानंद ने कहा था कि अगर भारतीयों ने अपनी आध्यात्मिकता का परित्याग कर दिया तो उनका विनाश शुरू हो जाएगा। इस तरह उन्होंने भारतीयों में स्वदेशी की भावना जागृत करने का काम किया तथा काम करने की प्रेरणा जागृत किया।**

**बाल गंगाधर तिलक भारतीयों को शिक्षा, विचारों एवं जीवन पद्धति से स्वदेशी बनाकर विदेशी विचारों से मुक्ति दिलाना चाहते थे। क्योंकि तिलक का मानना था कि स्वदेशी एवं राष्ट्रीय शिक्षा ही औपनिवेशिकता से मुक्ति के उपाय हैं। स्वदेशी विचार की भावना लोगों को देश की सेवा के प्रति ऊर्जा प्रदान करने का काम करती है।**

**गोपाल कृष्ण गोखले हथकरघा उद्योग का पुनरुत्थान करने पर विशेष बल प्रदान किया था। सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने 1902 के अध्यक्षीय भाषण में भारत को आर्थिक दुर्दशा से ऊपर उठाने के लिए स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग को आवश्यक बताया। तथा यह कहा कि हम अपने विचार ,कर्म और आचरण में स्वदेशी का उपयोग करें। तथा इस तरह बनर्जी स्वदेशी के प्रणेता थे।**

**गांधी जी ग्राम उद्योग एवं लघु उद्योग को बल प्रदान किया। तथा प्रत्येक परिवार को चरखा कातने का कार्यक्रम बताया। बुनियादी शिक्षा का दर्शन भी बहुत कुछ स्वदेशी व आत्मनिर्भरता से जुड़ा हुआ था।**

भारत की परंपराओं को आज भी विश्व सपना रहा है। हमें और हमारी भावी पीढ़ियों को भी भारत की प्राचीन मूल्य को यथोचित महत्व देना होगा । इसके लिए आंतरिक ज्ञान, गुण शक्ति एवं आदर्शों को ठीक रूप से पहचानना एवं सही दिशा प्रदान करना होगा।

हमें यह प्रयास किया जाना चाहिए कि भारतीय ज्ञान क्या है? एवं हमारी सुरक्षा व्यवस्था में इसकी क्या आवश्यकता है? जैसा कि नाम से ही विदित होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय संस्कृति के अलग-अलग कालखंड से प्राप्त अद्वितीय ज्ञान एवं प्रज्ञा का द्योतक है। इस ज्ञान परंपरा में आधुनिक विज्ञान प्रबंधन ,ज्योतिष विद्या, कर्म, धर्म, त्याग, भोग ,तपस्या, लौकिक एवं पारलौकिक सभी प्रकार के अद्भुत ज्ञान का संगम है। भारतीय ग्रंथो में इसका विस्तारित रूप देखा जा सकता है। पुराण ,वेद वेदांग ,रामायण ,ब्राह्मण ग्रंथ आदि विद्या को मनुष्य जीवन का श्रेष्ठ अंग स्वीकार करते हुए मनुष्य को ज्ञानवान बनाने का प्रयास करते रहे हैं।

अपनी जड़ों के बिना कोई भी समाज सफल नहीं हो सकता। हमारा अतीत स्थापत्य कला की भव्यता, इंजीनियरिंग के चमत्कार, कलात्मक उत्कृष्टता से भरा हुआ है । भारत की सांस्कृतिक संपदा का संरक्षण, प्रोत्साहन और प्रसार, देश की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। क्योंकि यह देश की पहचान के लिए महत्वपूर्ण है। भारतीय ज्ञान की परंपराओं को आगे बढ़ाकर हम एक नए युग की शुरुआत की नींव रख सकते हैं। हम सब को अपने पारंपरिक ज्ञान को समकालीन संदर्भगत प्रासंगिकता से जोड़ना होगा ।क्योंकि समकालीन चुनौतियों के समाधान हमारी पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों में निहित है।(PIB)

## सामाजिक एवं शैक्षणिक प्रासंगिकता

भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है। इस ज्ञान परंपरा में आधुनिक विज्ञान प्रबंधन सहित सभी क्षेत्र के लिए अद्भुत खजाना है। भारतीय दृष्टिकोण से ही ज्ञान परंपरा का अध्ययन कर हम एक बार फिर विश्व गुरु बन सकते हैं। हमें अपनी मानसिकता को बदलकर अपने जीवन में भारतीयता को अपनाने की जरूरत है। पश्चिम के विकासवादी मॉडल को छोड़कर ही हम दुनिया में खुशहाली ला सकते हैं। हमने अब तक जो कुछ पढ़ा है, जो भी हमें पढ़ाया गया है, ज्ञान संगम जैसे कार्यक्रमों में शामिल होकर लगता है कि वह एक तरफा है । हर विषय को पश्चिम के नजरिए से प्रस्तुत कर हमने प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का अपमान किया है। हम भारतीय अपनी परंपरा,

संस्कृति, ज्ञान और यहां तक की महान विभूतियों को तब तक खास तवज्जो नहीं देते, जब तक विदेशों में उसे ही ना स्वीकार किया जाए। यही कारण है कि आज अमेरिका में योग, आयुर्वेद, शाकाहार, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी होम्योपैथी जैसे उपचार लोकप्रियता पा रहे हैं । जबकि हम उन्हें बिसरा चुके हैं।

आज भारतीय ज्ञान को स्थापित करने की नहीं बल्कि इस ज्ञान के व्यापक भंडार को खोजने की जरूरत है। प्राचीन ग्रंथो में छुपे इस ज्ञान के खजाने को खोज कर उसे सवार कर मानव कल्याण के लिए इस्तेमाल में लाने की जरूरत है। भारतीय ज्ञान, संस्कृति एवं परंपराओं में ही वह सामर्थ्य है। जिससे भारत अकेले नहीं बल्कि पूरे विश्व को शांति पथ पर ला सकता है। भारत को अपने मूल से जुड़े रहने की जरूरत है । भारत अपने ज्ञान को पुनर्जीवित कर दुनिया को बेहतर दिशा की ओर ले जाने में अपना योगदान दे सकता है। भारतीय ज्ञान मनुष्य की आंतरिक शांति और मन की भावनाओं को नियंत्रण में रख सकती है। आज हमारे सामने कई समस्याएं हैं जिनका समाधान भारत के प्राचीन ज्ञान में है। देश की सरहद से ऊपर उठकर हमें मानवता के हित में कार्य करना होगा। भारतीय ज्ञान विज्ञान की यह परंपरा अनादि काल से है। स्वदेशी की संकल्पना के साथ-साथ हमारे भारत देश में शिक्षा विमर्श को समझना आवश्यक हो जाता है। आज के युग में वैश्वीकरण आधुनिकीकरण एवं तकनीकीकरण ने भारतीय संस्कृति में मूल्यों को बहुत प्रभावित किया है। खान-पान ,रहन-सहन, रीति रिवाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आधुनिक शिक्षा , प्राचीन शिक्षा प्रणाली को चुनौती प्रदान करती नजर आ रही है । यह सार्वभौमिक है कि शिक्षा ही किसी भी समाज में अपनी सांस्कृतिक पहचान और गौरव को पुनः स्थापित कर सकती है। तथा भारतीय संदर्भ में शिक्षा के माध्यम से स्वदेशी एवं आत्मनिर्भर समाज को पुनः निर्मित कर सकते हैं ।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम अनिवार्य रूप से बच्चे की मातृभाषा या स्थानीय भाषा बनाकर किया गया है। क्योंकि मातृभाषा के द्वारा शिक्षा भी स्वदेशी व आत्मनिर्भरता की संकल्पना से जुड़ी हुई है।

भारत की शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु सनातन ज्ञान एवं वर्तमान ज्ञान को एकीकृत करना अति आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परंपरा को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए।

हमारी परस्पर निर्भरता की समझ में निहित जलवायु समाधानों को आगे बढ़ाने में स्वदेशी लोगों के समृद्ध परिप्रेक्ष्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

**वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा की आवश्यकता-**

**हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा संपूर्ण विश्व में अपनी झलक आलोकित करती रही है। भारतीय ज्ञान परंपरा वैदिक एवं उपनिषद्, बौद्ध एवं जैन कल में मौजूद रही है। प्राचीन भारत की भारतीय ज्ञान प्रणाली परंपराओं एवं प्रथाओं को प्रोत्साहित करती थी। वर्तमान समय में प्रचलित भारतीय ज्ञान एवं विदेशों से आ रहीं नवीन खोजें, जो हमारे ग्रंथो में पूर्व से ही उल्लेखित रही हैं। वे सब भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्ध होने का एक महत्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करती है। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली वर्तमान परिदृश्य में और भी अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक विषय का परिचय दे रही है। आज हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा विमर्श के केंद्र का मुद्दा बनी हुई है हमारी केंद्र सरकार की नई शिक्षा नीति ने भारत के संस्कृत मूल आधारों को ठीक से जानने और समझने पर महत्वपूर्ण बल प्रदान किया है। जिसके द्वारा पारंपरिक ज्ञान कौशल एवं मूल्यों को शिक्षा से जोड़ने और उसके नवीन प्रयोगों के लिए संस्कृति दी गई है। भारत देश की बहुआयामी विविधता,संस्कृति एवं आवश्यकताओं पर विचार करते हुए भारत वासियों को सामाजिक,सांस्कृतिक, नैतिक व रचनात्मक अधिगम के साथ-साथ पारस्परिक सहयोग, एकता, अखंडता एवं भारत की भावना के विकास पर भारतीय ज्ञान प्रणाली बलिदान करती रही है।**

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तनों की ओर संकेत दिया है।**

**निष्कर्ष- भारतीय शिक्षा प्रणाली में विश्वसनीयता, नैतिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की मान्यताएं भरी पड़ी हैं ।जो कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली की महत्वपूर्ण आवश्यकताएं हैं। इन नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक जिम्मेदारियों व व्यक्तिगत विकास को विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण गाना जाता रहा है। आज वर्तमान दौर परिवर्तन बहुत तेजी वेग के साथ आगे बढ़ रहा है। ऐसे में भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली के मध्य में सामंजस्य बैठा कर आगे बढ़ना एक चुनौती पूर्ण विषय बनता जा रहा है। भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं को शिक्षा में शामिल करने पर बल प्रदान किया जाए।समर्थ शिक्षकों के द्वारा छात्रों को भारतीय ज्ञान के मूल्य से परिचित कराया जाए ।छात्रों को धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूक तथा उन्हें समझने का प्रयास किया जाए। अनुशासन, सहनशीलता एवं सामाजिक सहयोग की भावना के प्रति उन्हें समझाने का प्रयास किया जाए। यदि उपर्युक्त समस्त बिंदुओं पर ध्यान देकर आगे बढ़ा जाए तो निश्चित तौर पर हमारा देश अपनी भारतीय शिक्षा प्रणाली के उद्देश्यों को प्राप्त करने में जरूर सफल साबित होगा, आता है आज या सिर्फ एक कल्पना नहीं है बल्कि हमारी सरकार इस**

**क्षेत्र पर बहुत तेजी के साथ कार्य करती हुई नजर आ रही हैं। हमारा भारत देश हमेशा से ही विश्वपटल पर एक समृद्ध एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध राष्ट्र की मान्यता प्राप्त करता रहा है। जिसके अंतर्गत ज्ञान प्रणालियों एवं बौद्धिक उपलब्धियों का एक लंबा इतिहास देखा गया है। वर्तमान के कुछ वर्षों में भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणा ने जो गति पकड़ी है उससे भारत की प्राचीन परंपराओं और ज्ञान को पुनर्जीवंतता मिली है। हमारे देश की ज्ञान प्रणाली ने न सिर्फ भारतीयों को ही प्रभावित किया बल्कि संपूर्ण विश्व को अपनी ओर आकर्षित करने का काम किया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में परिवर्तन होने से ज्ञान, परंपरा , कला, कौशल ,शिल्प आदि विभिन्न क्षेत्रों में गहरा परिवर्तन देखा जा सकेगा। जिससे भारत का आत्म सम्मान एवं स्वाभिमान बढ़ेगा। बताया नहीं संदेश कहा जा सकता है है कि भारतीय ज्ञान परंपरा एवं भारतीय शिक्षा के मध्य जो सामंजस्य की झलक देखने को मिलती है। उसको और अधिक मजबूती प्रदान करने के लिए हमारी सरकार ने महत्वपूर्ण बदलावों का स्वागत किया है ।आने वाले कुछ वर्षों में हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा एवं शिक्षा, संपूर्ण विश्व में अपनी झलक बिखेरती नजर आएगी ।**

**संदर्भ ग्रंथ सूची-**

**1-शर्मा संजय एवं अश्विनी, स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत की औपनिवेशीकरण की शिक्षायी परियोजना**

**2- सिंह प्रो.गीता,भारतीय ज्ञान परंपरा की भारतीय शिक्षा नीति में प्रासंगिकता**

**3- अमरेंद्र कुमार आर्य, भारतीय ज्ञान परंपरा सामाजिक जरूरत की उपज**

**4- सिरोला,सागर डॉ. देवकी सिरोला , भारतीय ज्ञान परंपरा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**

**5- कुमार राकेश, कुमार देवेंद्र, सिंह रमाकांत, भारतीय ज्ञान प्रणाली के शैक्षिक निहितार्थ: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में**

**6- पट्टूकले प्रो क्षितिज, भारतीय ज्ञान प्रणाली:कुछ दशकों में भारत का पुनरुद्धार**

7- Mehta P.S sharma,K.A.and Negi K.S.,Indigenous knowledge system and sustainable development with particular reference to folklore of Kumaon Himalaya uttarakhand

8- Urvi Kamboya, Indigenous knowledge and sustainable development

9- PIB news.

10-Down to Earth, Magazine

11- S.M.Singh,A.P.Brig, Ancient Indian knowledge system and their relevance today - with an emphasis on Arthashastra.